श्री अखिल भारतीय माहेश्वरी सेवा सदन,अयोध्या द्वारा निर्मित किए जाने वाले सामुदायिक भवन के लिए आयोजित भूमि पूजन कार्यक्रम में माननीय अध्यक्ष का सम्बोधन

जय-जय श्री राम !श्री रामलला की जय !

अभिवादन !

सप्त पूरियों में सबसे प्राचीन नगरी,रघुवंश शिरोमणि मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान प्रभु श्री राम की जन्मस्थली, अत्यंत पावन नगरी,जहां आकर जन्म-जन्मांतर के पाप नष्ट हो जाएं ऐसी पतित पावनी माँ सरयू के तट पर बसी विश्व की सांस्कृतिक राजधानी अयोध्या जी में आकर मैं अत्यंत प्रसन्नता का अनुभव कर रहा हूँ।

तुलसीदास जी कहा करते थे –

कोटि कल्प काशी बसे,मथुरा कल्प हजार,

एक निमिष सरयू बसे,तुले ना तुलसी दास॥

आज मन बहुत प्रसन्न भी हैं,ओर भावुक भी। आज भगवान श्री रामलला के नयनाभिराम दर्शन कर अपने आपको धन्य अनुभव कर रहा हूँ। वर्षों की कठिन तपस्या आज सफल हुई हैं।

अनेक संत-सत्पुरूषों का संकल्प पूरा हुआ हैं। विश्व पटल पर भारत के विराटसांस्कृतिक स्वरूप की ध्वजा लहरा रही हैं। मेरे राम अयोध्या वापस लौट आए हैं। उसी भव्य ओर नव्य स्वरूप में अयोध्या का ऐश्वर्य फिर लौट आया हैं।

श्री अखिल भारतीय माहेश्वरी सेवा सदन द्वारा “सामुदायिक भवन” की इस भव्य परियोजना के लिए आयोजित किए जा रहे भूमि पूजन समारोह के पावन अवसर पर आज यहां आप सभी के बीच आकर मुझे बहुत खुशी हो रही है।

मैं इस अवसर पर श्री अखिल भारतीय माहेश्वरी सेवा सदन को इस अद्भुत पहल के लिए हार्दिक बधाई देता हूं। सहयोग, समर्पण, सामूहिकता, सेवा और सरोकार, यह माहेश्वरी समाज की विशेषता है।

देश के औद्योगिक विकास में, अर्थव्यवस्था और व्यापार के क्षेत्र में माहेश्वरी समाज का योगदान अतुलनीय रहा है।

माहेश्वरी समाज में ऐसे अनगिनत नाम है जिन्होंने देश की अर्थव्यवस्था को रफ्तार दी है। अपने परिश्रम, प्रतिबद्धता और कौशल के बल पर माहेश्वरी समाज ने सेवा के रास्ते भारत को आत्मनिर्भरता व उन्नति की तरफ आगे बढ़ाया है।

आज देश के कई हिस्सों में ऐसे सेवा सदन,सामुदायिक भवन,अस्पताल और स्वास्थ्य केंद्र हैं, जो माहेश्वरी समाज ने बनाए हैं और उन अस्पतालों में आमजन का उन्नत इलाज हो रहा है।

सदियों से उद्योग-व्यापार-व्यवसाय के लिए जाने जाने वाला माहेश्वरी समाज आज शिक्षा,सेवा,चिकित्सा के क्षेत्र में भी उत्कृष्ट कार्य कर रहा है। हम अपने बच्चों को, आने वाली पीढ़ियों को अच्छी शिक्षा दे रहे हैं। हमने शिक्षा ओर सेवा के महत्व को समझा है और इसके लिए हमगंभीरता से काम कर रहे हैं।

आपके यह कार्य माहेश्वरी समाज की सामुदायिक भावना को दर्शाते हैं, जो वास्तव में अत्यंत सराहनीय है। आजकल हम अक्सर देखते हैं कि लोग अकेलेपन और अवसाद की समस्याओं से जूझ रहे हैं। ऐसे में, मेरा मानना है कि अगर लोग इस प्रकार के संगठनों से जुड़कर खुद को समाज सेवा के लिए समर्पित कर दें, तो उनका जीवन सुखद हो जाएगा।

साथियो, तीन तरह की पूंजी होती है– आर्थिक,सांस्कृतिक और सामाजिक। माहेश्वरी समाज ने अपने परिश्रम से इन तीनों पूंजियों को प्राप्त किया है।

समाज ने आर्थिक रूप से अपने आपको सशक्त किया है, अपने संस्कार, अपनी पहचान को स्थापित किया है और सामाजिक रूप से भी अपने आप को मजबूत बनाया है।

अयोध्या समूची भारतीय चेतना की प्रतिनिधि हैं। अयोध्या अनादिकाल से भारतीय सांस्कृतिक मूल्यों का नाभिकीय केंद्र रही हैं। और राम जिस शील, विनय ओर मर्यादा के लिए जाने जाते हैं, अयोध्या उसका बीज केंद्र हैं।

राम भारत की प्राणशक्ति हैं। राम ही धर्म हैं। धर्म ही राम है। हमारे धर्म ग्रंथों ने भी कहा हैं - **रामो विग्रहवान् धर्मः।**

मानव चरित्र की श्रेष्ठता और उदात्तता का सीमांत राम से बनता है। कष्ट और नियति चक्र के बाद भी राम का सत्यसंध होना भारतीयों के मनप्राण में गहरे तक बसा है।

हर व्यक्ति के जीवन में हर कदम पर जो भी अनुकरणीय है, वह राम है। ऐसे राम अयोध्या में फिर लौट आए हैं। अपने भव्य, दिव्य और विशाल मंदिर में, जिसके लिए पाँच सौ साल तक हिंदू समाज को संघर्ष करना पड़ा, अयोध्या में तैयार यह भव्य मंदिर सनातनी आस्था का शिखर है।

मुझे बताया गया कि इस सदन में एक सभागार का निर्माण किया जाएगा, जहां विचार-विमर्श किया जाएगा, चर्चा की जाएगी और भविष्य की योजनाएँ बनाई जाएंगी। यहाँ एक मंदिर का भी निर्माण होगा, जहां आकर लोग शांति का अनुभव करेंगे और इससे आध्यात्मिकता का प्रचार-प्रसार भी होगा।

जरूरतमंद लोगों के ठहरने के लिए यहाँ कमरों की व्यवस्था रहेगी,निराश्रितों को आश्रय और व्यथित लोगों को भी यहाँ शरण मिलेगी। इस सदन में एक औषधालय भी होगा, जहां बीमार लोगों का इलाज होगा।

आज इस सामुदायिक भवन की आधारशिला रखने के अवसर पर हम एक ऐसे उज्जवल भविष्य की नींव भी रखें, जहां लोगों में उदासीनता के बजाय सहानुभूति और मतभेदों के स्थान पर एकता की भावना हो एवं जहां सेवाभाव ही हमारा मार्गदर्शक सिद्धांत हो। आइए, हम सब इस सदन को प्रेम से, करुणा और सेवा के साथ संचालित करने का संकल्प लें।

मैं इस पुनीत कार्य में योगदान देने वाले, अपना समय तथा ऊर्जा समर्पित करने वाले एवं इसमें निरंतर सहयोग देने वाले सभी लोगों का हृदय से आभार व्यक्त करता हूं।

आइए, हम सेवा की शक्ति में अटूट विश्वास के साथ लोगों के जीवन में बदलाव लाने तथा मानवता के उत्थान के लिए इस यात्रा की शुरुआत करें।

मेरी कामना है कि ईश्वर के आशीर्वाद से हम सदैव सेवा और त्याग के पथ पर अग्रसर रहें। मुझे विश्वास हैं कि भगवान श्री रामलला के आशीर्वाद से यह कार्य भी जल्द ही पूरा होगा। जय-जय श्री राम !